नाम — डॉ. मोती लाल शाकार

महाविद्यालय का नाम - दुर्ग महाविद्यालय

संकाय — कला

पदनाम — सहायक प्राध्यापक

विषय — 'भाषाविज्ञान'

शीर्षक — 'अर्थ परिवर्तन का स्वरूप'

अर्थ परिवर्तन का स्वरूप

डॉ. मोती लाल शाकार,
सहायक प्राध्यापक
दुर्गा महाविघालय, रायपुर

शोधसार – प्रत्येक शब्द का अर्थ होता है, किंतु यह अर्थ सर्वदा एक नहीं रहता । उसमें परिवर्तन होता रहता है उदाहरण के लिए संस्कृत का शब्द आकाशवाणी लें । इसका अर्थ देववाणी है। तुलसी के समय में भी यही अर्थ था। रामचरितमानस में आता है 'भै अकासबानी तेहि काला' अर्थात् उस समय देववाणी हुई। मनुष्य की मनःस्थिति में सर्वदा परिवर्तन होता रहता है। भाषा विचारों की वाहिका है उसे भी विचारों का साथ देना पड़ता है। इस साथ देने के प्रयास में ही उसके शब्दों में अर्थ परिवर्तन आ जाता है। एक शब्द के अर्थ परिवर्तन पर विचार करते समय कभी एक कारण दिखाई पड़ता है, तो कभी दूसरा । फिर भी एक बात तो तय है कि सादृश्य , बल तथा भाव साहचर्य ही घूम–फिर कर अर्थ परिवर्तनों में अधिक कार्य करते दिखाई पड़ते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ सामाजिक और भौगोलिक कारण भी होते हैं। कभी–कभी व्यक्ति या संप्रदाय में विचार – विभिन्नता के कारण भी अर्थ– परिवर्तन हो जाता है।

मुख्य शब्द – अभिव्यक्ति , मूल्यहीन , प्रतीक , स्पर्श , ज्ञप्ति , साधुत्व , कालान्तर , व्युत्पत्तिमूलक, गवेषणा, दुहिता,।

प्रस्तावना – शब्द और अर्थ का नित्य संबंध है परंतु विभिन्न कारणों से शब्द का अर्थ बदलने लगता है और अगली पीढ़ी तक आते–आते पूरी तरह बदल जाता हैं। 'पत्र' शब्द की यात्रा से हम इस सिद्घांत को भली–भाँति समझ सकते हैं। 'पत्र' का अर्थ पत्ता है। प्राचीन काल में कागज नही होता था और लोग पत्तों पर लिखा करते थे। जब भूर्ज' वृक्ष की छाल (भोज पत्र) लिखने के काम आने लगी तो उसे पत्र कहने लगे। बाद में कागज 'पत्र' बन गया और समाचार पत्र, आवेदनपत्र, प्रश्नपत्र जैसे शबद प्रचलित हो गए। अर्थ या शब्दार्थ यद्यपि काल्पनिक एवं सांकेतिक है, परंतु अर्थ बोध का साक्षात् संबंध मन से है। मानव मन–गतिशील, चंचल, भावुक, संवेदनशील एवं नवीनता का प्रेमी है। अतः विभिन्न परिस्थितियों में मानव मन की स्थिति एक सी नहीं होती है यही कारण है कि राग–द्वेष, क्रोध, घृणा, आवेश आदि में उच्चरित शब्दों के अर्थो में अतंर होता है। यह अर्थ परिवर्तन प्रारंभ में व्यक्तिगत होता है परंतु बाद में समाज के द्वारा स्वीकृत होने पर भाषा में ग्रहण कर लिया जाता है और भाषा का अंग बन जाता है। इस प्रकार अर्थ परिर्वतन की समस्त प्रकिया मनोवैज्ञानिक है। कभी–कभी व्यक्ति या संपप्रदाय में विचार – विभिन्नता के कारण भी अर्थ– परिवर्तन हो जाता है "अर्थ तत्व का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि परिस्थितियों के वशीभूत होकर शब्दों के अर्थ का विकास कभी मूल अर्थ को विस्तृत कर देता है या फिर आंशिक रूप में। वस्तुतः अर्थ तत्व भाषाविज्ञान के अंतर्गत सबसे विवादास्पद विषय समझा जाता है।"1 मनुष्य कम से कम परिश्रम करके अपना काम निकालना चाहता है और कम शब्दों में अधिक से अधिक भाव व्यक्त कर सके। इस प्रयास में अधिक प्रयोग में आने वाले शब्दों में कुछ अंश वह छोड़ देता है। ऐसा करने से शेष अंश ही पूरे का अर्थ देने लगता है। और इस प्रकार अर्थ परिवर्तन हो जाता है।

अर्थ का स्वरूप तथा महत्व –

अर्थ के अभाव में भाषा की कोई सार्थकता नहीं है। इस दृष्टि से भाषा के साथ–साथ अर्थ के संबंध में भी काफी कार्य भारत में हुए । अर्थ की अभिव्यक्ति का मुख्य माध्यम शब्द है। शब्द जिसके लिए प्रयुक्त किया जाता है, वही उसका अर्थ होता है। आचार्य यास्क मुनि ने भी अर्थ पर कुछ इस प्रकार प्रकाश डाला है–

"अथान्वितेअर्थेअ प्रादेशिके विकारेअर्थनित्यः।
परीक्षेत केनचिद् वृत्तिसागान्येन ।।"2

अर्थ की महत्ता असाधारण है। अर्थ से ही भाषा को सामाजिक स्वीकृति मिल पाती है। अर्थ के बिना भाषा की कोई आकृति तक नहीं हो पाती। अर्थहीन भाषा और शब्द मूल्यहीन है यास्क कहते हैं, 'जिस प्रकार

अग्नि के अभाव में सूखा ईधन जल नहीं सकता , ठीक उसी प्रकार बिना अर्थ को जाने – समझे जो शब्द दुहराया जाता है, वह कभी भी मुख्य विषय पर प्रकाश नहीं डाल सकता ।

शब्द और अर्थ का संबंध–

शब्द विचार या अर्थ का प्रतीक होता है। शब्द और अर्थ में वाणी तथा विचार का सा रिश्ता है। अर्थ की अभिव्यंजना शब्द से ही हो सकती है। बिना शब्द के अर्थ की कोई सत्ता नहीं है। कभी–कभी कुछ भावों, अर्थों या विचारों का जन्म संकेतों द्वारा कर लिया जाता है। किसी भी अभिव्यक्ति के लिए सबसे पहले मन में अर्थ उठता है। भर्तृहरि कहतें हैं–" अर्थ ब्रह्म शब्दब्रह्म का विकास है। बट्रेन्ड रसेल के अनुसार शब्द और अर्थ का संबंध दृष्टि और स्पर्श की तरह अभ्वासगत होता है।"3
कुछ विचारकों ने शब्द और अर्थ के संबंध को नित्य तथा कुछ ने अनित्य माना है। पतंजलि के अनुसार शब्दार्थ संबंध पहले से ही विद्यमान रहता है। शब्द का प्रयोग सदैव अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए होता है। इसलिए दोनों में घनिष्ठ संबंध है। शब्द और अर्थ की पारस्परिक अभिन्नता को पारिभाषिक शब्दों में व्यक्त करने के लिए भारतीय आचार्यों में चार वाद प्रचलित हैं–

उत्पत्तिवाद– इस स्थापना का आधार ऋग्वेद का यह मंत्र है– यत्र धीरा मनसा वाचमकृत आशय यह है कि धीर ऋषियों ने मन से वाणी की रचना की। मन का प्रयोग यहाँ एक निश्चित अभिप्राय को लेकर हुआ है। मन यहाँ प्रतीक है, उस मानसिक विचार अथवा भाव का जो पहले से ही व्यक्ति के मस्तिष्क में विद्यमान होते हैं। कुल मिलाकर शब्द और अर्थ के बीच का संबंध तय करना ही इस मत का मूल आशय हैं। इसके अनुसार शब्द का व्यवहार बाद में होता हैं किंतु अर्थ की स्थिति पहले से ही बनी रहती है।

ज्ञप्तिवाद– इस धारणा के अनुसार शब्द से अर्थ की ज्ञप्ति होती है। शब्द से अर्थ का संबंध ठीक वैसे ही होती है जैसेः– साँस से वायु की। पाणिनि ने भी 'सुबन्त' और 'तिडन्त' को पद कहा है।

अभिव्यक्तिवाद– इसका अर्थ शब्द के द्वारा अर्थ की अभिव्यक्ति से है। सामान्यता शब्द को कान सुनता है। और उसके साधुत्व को व्याकरण देखता है, बुद्धि से ग्रहण किया जाता है।

प्रतीकवाद– इस मत के अनुसार शब्द और अर्थ में प्रतीकात्मक रिश्ता होता है। वह इसलिए कि हमारे मन में बैठी वस्तु के अर्थ का सूचक शब्द ही हैं भर्तृहरि के अनुसार–

" ज्ञानं प्रयोक्तुर्बाह्योअर्थः स्वरूप च प्रतीयते।
शब्दैरूच्चारितैस्तेषां संबंधः समवस्थितः।"4

जब शब्दों का उच्चारण किया जाता हैं, तब उसका सबंध– तीन रूपों में प्रतीत होता हैं–एक ज्ञान के रूप में, दूसरा बाह्य पादार्थ के रूप में और तीसरा शब्द के रूप में। होता यह हैं कि कुछ वस्तुओं के बोध के लिए हम अपने घर में अलग–अलग नाम रख लेते हैं। कालान्तर में प्रतिदिन के प्रयोग से यही नाम उन वस्तुओं के सच्चे प्रतीक बन जाते हैं।

अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ– अर्थ परिवर्तन किन–किन दिशाओं मे होता है इस विषय पर सबसें पहले फ्रांसीसी भाषाविज्ञानवेत्ता ब्रील ने विचार किया था। उन्होंने तीन दिशाओं की खोज की अर्थ विस्तार, अर्थ संकोच, अर्थादेश अभी तक ये ही दिशाएँ बहुस्वीकृत है।

अर्थविस्तार – इसका अर्थ है अर्थ का सीमित क्षेत्र से निकलकर विस्तार पा जाना उदाहरण के लिए संस्कृत का एक शब्द हैं तैल जिसका मूल अर्थ है' तिल का रस अर्थात् संस्कृत में मूलतः 'तिल के तेल' को ही 'तैल' कहते थें। यही इसका व्युत्पत्तिमूलक अर्थ था। किंतु इसका विस्तृत् अर्थ सभी चीजो के तेल के लिए होता है तिल, सरसो, अलसी, मूँगफली, मछली का तेल, इस तरह तेल के अर्थ का विस्तार हो गया।
श्रीगणेश का मूल अर्थ किसी शुभ कार्य का आरंभ जिसके प्रारंभ में 'श्रीगणेशायः नमः' कहते थे अब किसी भी अच्छे बुरे कार्य का प्रारंभ। प्रवीण मूलतः वीणा बजाने में निपुण अब किसी भी कार्य में निपुण हो प्रवीण

है। 'गवेषणा' क्रिया का प्रयोग गायों के ढूँढ़ने में हुआ करता था। आज किसी भी तरह की खोज भले ही वैज्ञानिक ही क्यों न हो 'गवेषणा' कही जाती है

अर्थ संकोच– इसमें विस्तृत अर्थ संकुचित हो जाता हैं डॉ. जलज के अनुसार "भाषा में अर्थ–विस्तार की प्रवृति जहाँ मनुष्य स्वभावजन्य है, वहाँ अर्थ संकोच की प्रवृत्ति उसके विवेक के आधार पर होती है। इसलिए अर्थविस्तार की स्वाभाविकता के विपरीत यह एक कृत्रिम प्रवृति है।"5
उदाहरण के लिए संस्कृत 'मृग' का मूल' अर्थ' पशु है। शिकार का वाचक 'मृगया' तथा पशुओ के राजा' सिंह के लिए 'मृगराज' के प्रयोग में मूल अर्थ आज भी सुरक्षित है किंतु आगे चलकर इस शब्द के अर्थ में संकोच हो गया और सभी पशुओं का वाचक शब्द मृग केवल 'हिरन का वाचक हो गया। 'मृग' सामान्य पशु से विशेष पशु हो गया है। 'जलज' मूलतः जल में जनमने वाली किसी भी चीज का वाचक रहा होगा, जैसे पंकज पंक मे जनमने वाली हर चीज थी किंतु बाद में अर्थ संकोच हुआ और ये दोनों शब्द केवल कमल के वाचक रह गए। विद्यार्थी मूलतः वे सभी लोग है जो 'विद्या' के अर्थी है चाहे वे स्कूल में पढ़ते हों या न पढ़ते हों या सत्तर वर्ष के बुद्ढे हों। अब यह शब्द अर्थ–संकोच के कारण 'छात्र' का समानार्थी हो गया है।

अर्थादेश – आदेश का अर्थ होता है परिवर्तन। जब किसी शब्द का असली अर्थ लुप्त हो जाए तथा उसकी जगह कोई नया अर्थ आ जाए, वहाँ अर्थादेश होता है। ऋग्वेद में 'असुर' शब्द का प्रयोग देवता के अर्थ मे हुआ है। भारतीय आर्यो में असुर शब्द का अर्थ 'राक्षस' कर लिया। 'गवाँर' शब्द का मूल अर्थ ग्रमीण है लेकिन आज मूर्ख मनुष्य गवाँर कहलाता है। 'उपवास' का अर्थ था अग्नि के पास रहना लेकिन आज 'व्रत' या 'भूखा रहना 'उपवास' समझा जाता है। 'दुहिता का अर्थ दूध दूहने वाली कन्या लेकिन आज इस शब्द का अर्थ 'बेटी' है। महाराजा शब्द का अर्थ 'महान राजा' हुआ करता था, किंतु आज भोजन बनाने वाले सभी 'रसोइये',महाराजा बन बैठे हैं।"

निष्कर्ष – अर्थ परिवर्तन की इस प्रक्रिया में कुछ अर्थ पहले की तुलना में अच्छी वस्तुओं के प्रतीक बन जाते हैं लेकिन कुछ बुरे अर्थो में प्रयूक्त होने लगते हैं। कभी–कभी किसी शब्द के रूप के कारण हम उसे कुछ का कुछ समझ लेते हैं। और फलतः उसके अर्थ मे परिवर्तन आ जाता है। शब्दों की पुनरावृत्ति से भी अनेक बार अर्थ बदल जाता है। अर्थ परिवर्तन में भौगोलिक, भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि कारणों की भूमिका सक्रिय रूप से रहती है।

संदर्भ–सूची–

1. Stephen Uilmann; Semantics; paje -54
2. पांडेयः डॉ. कैलाश नाथ, भाषा विज्ञान का अनुशीलन, जय प्रकाशन गाजीपुर पृ. 163
3. पांडेयः डॉ. कैलाश नाथ, भाषा विज्ञान का अनुशीलन, जय प्रकाशन गाजीपुर पृ. . 167
4. पांडेयः डॉ. कैलाश नाथ, भाषा विज्ञान का अनुशीलन, जय प्रकाशन गाजीपुर पृ. . 169
5. ऐतिहासिक भाषविज्ञानः सिद्धांत और व्यवहार, पृ. 159